सुंदरकांडप्रारंभस्तसमत्राणि

२१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० १

श्रीगणेशायनमः॥श्लोक॥ः शांतंशाश्वतमप्रमेयमनघंनिर्वाणशांतिप्रदं॥ब्रह्मा
शंभुफणींद्रसेव्यमनिशंवेदांतवेद्यं विभुं रामाख्यंजगदीश्वरंसुरगुरुंमायामनुष्यं
हरिं॥वंदेहंकरुणाकरंरघुवरंभूपालचूडामणिं॥१॥नान्यास्पृहारघुपतेहृदयेस्म
दीये॥सत्यंवदामिचभवानखिलांतरात्मा॥भक्तिंप्रयच्छरघुपुंगवनिर्भरांमे॥कामादि
दोषरहितंकुरुमानसंच॥२॥अतुलितबलधामंस्वर्णशैलाभदेहं॥दनुजवनकृशा
नुंज्ञानिनामग्रगण्यं॥सकलगुणनिधानंवानराणामधीशं॥रघुपतिवरदूतंवात
जातंनमामि॥३॥चौपाई॥ःजामवंतकेबचनसोहाये॥सुनिहनुमंतहृदयअतिभा
ये॥तबलगिमोहिपरषेहुतुम्हभाई॥सहिदुखकंदमूलफलषाई॥जबलगिआवौंसीत १
हिदेषी॥होइहिकाजमोहिहरषविशेषी॥असकहिनाइसवन्हिकहुमाथा॥चलेउ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हरषिहियधरिरघुनाथा॥ सिंधुतीरएकभूधरसुंदर॥ कौतुककूदिचढेउताऊपर॥ बा
रबाररघुबीरसंभारी॥ तरकेउपवनतनयबलभारी॥ जेहिगिरिचरनदेइहनुमंता॥ च
लेउसोगापातालतुरंता॥ जिमिअमोघरघुपतिकरबाना॥ एहीभांतिचलाहनुमाना॥
जलनिधिरघुपतिदूतबिचारी॥ तैमैनाकहोहिश्रमहारी॥ दोहा॥ हनूमानतेहि
परसाकरपुनिकीन्हप्रनाम॥ रामकाजकीन्हेबिनुमोहिकहांबिश्राम॥१॥ जातपव
नसुतदेवन्हदेखा॥ जानैकहुंबलबुद्धिबिसेषा॥ सुरसानामअहिन्हकैमाता॥ पठइ
न्हिआइकहीतेहिबाता॥ आजुसुरन्हमोहिदीन्हअहारा॥ सुनतबचनकहपवन
कुमारा॥ रामकाजकरिफिरिमैआवौं॥ सीताकेसुधिप्रभुहिसुनावौं॥ तबतवबदनप
ठिहौंआई॥ सत्यकहौंमोहिजानदेमाई॥ कवनेहुजतनदेइनहिजाना॥ ग्रस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० २ सिनमोहिकहेउहनुमाना॥जोजनभरितेहिंवदनपसारा॥कपितनकीन्हदुगुन
विस्तारा॥सोरहजोजनमुषतेहिंठएउ॥तुरतपवनसुतवत्तिसभएउ॥जसजससुर
साबदनबढावा॥तासुदूनकपिरूपदिषावा॥सतजोजनतेहिंआननकीन्हा॥अतिल
घुरूपपवनसुतलीन्हा॥बदनपैठिपुनिबाहेरआवा॥मागाविदाताहिसिरुनावा॥मो
हिसुरन्हजेहिलागिपठावा॥वुधिवलमरमतोरमैंपावा॥दोहा॥ रामकाजसवुकरि
हहुतुम्हवलवुद्धिनिधान॥आसिषदेइगईसोहरषिचलेहनुमान॥२॥निसिचरि
एकसिंधुमहुँरहई॥करिमायानभकेषगगहई॥जीवजंतुजेगगनउडाहीं॥जल
विलोकितिन्हकैपरिछाहीं॥गहैछांहसकसोनउडाई॥येहिविधिसदागगन २
चरषाई॥सोईछलहनुमानकहंकीन्हा॥तासुकपटकपितुरतहिंचीन्हा॥ताहि

मारिमारुनसुनवीरा॥वारिधपारगएउमतिधीरा॥तहांजाइदेषीवनसोभा॥गुंजत
चंचरीकमधुलोभा॥नानातरुफलफूलसोहाये॥षगमृगवृंददेषिमनभाये॥सैल
विसालदेषिएकआगे॥तापरधाइचढेउअभयत्यागे॥उमानकछुकपिकैअधिकाई॥
प्रभुप्रतापजोकालहिषाई॥गिरिपरचढिलंकातेहिदेषी॥कहिनजाइअतिदुर्गवि
शेषी॥अतिउतंगजलनिधिचहुंपासा॥कनककोटकरपरमप्रकासा॥छंद॥:कन
ककोटविचित्रमनिकृतसुंदरायतनाघना॥चउहट्टहट्टसुवट्टवीथीचारुपुरवहु
विधिवना॥गजवाजिषच्चरनिकरपदचररथवरूथन्हिकोगनै॥वहुरूपनिसिचर
जूथअतिवलसेनवरनतनहिवनै॥वनवागउपवनवाटिकासरकूपवापीसोह
हीं॥नरनागसुरगंधर्वकन्यारूपमुनिमनमोहहीं॥कहुंमालदेहविसालसैलस

सुं० ३ मानअतिबलगर्जेहीं।।नानाअखारेन्हभिरहिंबहुबिधिएकएकन्हतर्जहीं।।करिजत
नभटकोटिनबिकटतननगरचहुँदिसिरछहीं।।कहुँमहिषमानुषधेनुखरअजख
लनिसाचरभछहीं।।एहिलागितुलसीदासइन्हकीकथाकछुएकहेकही।।रघु
बीरसरतीरथसरीरन्हित्यागिगतिपैहहिंसही।।दोहा।।पुररखवारेदेखिबहुकपिमन
कीन्हबिचार।।अतिलघुरूपधरौंनिसिनगरकरौंपइसार।।३।।मसकसमानरूपकपि
धरी।।लंकहिचलेउसुमिरिनरहरी।।नामलंकिनीएकनिसिचरी।।सोकहचलेसिमो
हिनिंदरी।।जानेनहीमरमसठमोरा।।मोरअहारजहांलगिचोरा।।मुठिकाएकमहा
कपिहनी।।रुधिरबमतधरनीढनमनी।।पुनिसंभारिउठीसोलंका।।जोरिपानिकर ३
बिनयससंका।।जबरावनहिब्रह्मबरदीन्हा।।चलतबिरंचिकहामोहिचीन्हा।।बिक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लहोसितैकपिकेमारे॥ तबजानेसुनिसिचरसंघारे॥ तातमोरअतिपुन्यबहूता॥ देखे
उनयनरामकरदूता॥ दोहा॥ः तातस्वर्गअपवर्गसुखधरियतुलाएकअंग॥ तूलन
ताहिसकलमिलिजोसुखलवसतसंग॥४॥ प्रविसिनगरकीजेसवकाजा॥ हृदयरा
षिकोसलपुरराजा॥ गरलसुधारिपुकरेमिताई॥ गोपदसिंधुअनलसितलाई॥ गरु
उसुमेरुरेनुसमताही॥ रामकृपाकरिचितवाजाही॥ अतिलघुरूपधरेउहनुमाना॥
पैठानगरसुमिरिभगवाना॥ मंदिरमंदिरप्रतिकरिसोधा॥ देखेजहँतहँअगनित
जोधा॥ गयउदसाननमंदिरमाही॥ अतिविचित्रकहिजातसोनाही॥ सयनकिएदेखा
कपितेही॥ मंदिरमहुनदीषिवैदेही॥ भवनएकपुनिदीषसोहावा॥ हरिमंदिरतहँ
भिन्नवनावा॥ दोहा॥ः रामायुधअंकितगृहसोभावरनिनजाइ॥ नवतुलसिकावृं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० दत हृदं देखि हरषेकपिराइ॥ ५॥ लंकानिसिचरनिकरनिवासा॥ इहाँकहाँसज्जनकर
४ बासा॥ मनमहुँतरककरैकपिलागा॥ तेहीसमयबिभीषनुजागा॥ रामरामतेहिसुमि
रनकीन्हा॥ हृदयहरषकपिसज्जनचीन्हा॥ येहिसनहठिकरिहौंपहिचानी॥ साधु
तेहोइनकारजहानी॥ बिप्ररूपधरिबचनसुनाये॥ सुनतबिभीषनउठितहँआये॥
करिप्रनामपूछीकुसलाई॥ बिप्रकहहुनिजकथाबुझाई॥ कीतुम्हहरिदासन्हम
हुकोई॥ मोरहृदयप्रीतिअतिहोई॥ कीतुम्हरामुदीनअनुरागी॥ आएहुमोहिकर
नबडभागी॥ दोहा॥ तबहनुमंतकहीसबरामकथानिजनाम॥ सुनतजुगलतनपु
लकमनमगनसुमिरिगुनग्राम॥ ६॥ सुनहुपवनसुतरहनिहमारी॥ जिमिदसनन्हि न ४
महुजीभबिचारी॥ तातकबहुमोहिजानिअनाथा॥ करिहहिकृपाभानुकुलनाथा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तामसतनुकछुसाधननाहीं ॥ प्रीतिनपदसरोजमनमाहीं ॥ अबमोहिभाभरोसह
नुमंता ॥ बिनुहरिकृपामिलहिनहिसंता ॥ जौंरघुबीरअनुग्रहकीन्हा ॥ तौतुम्हमोहि
दरसुहठिदीन्हा ॥ सुनहुबिभीषनप्रभुकइरीती ॥ करहिसदासेवकपरप्रीती ॥ कह
हुकवनमैपरमकुलीना ॥ कपिचंचलसबहींबिधिहीना ॥ प्रातलेइजोनामहमारा ॥
तेहिदिनताहिनमिलैअहारा ॥ दोहा ॥ असमैअधमसखासुनुमोहूपररघुबीर ॥ की
न्हीकृपासुमिरिगुनभरेबिलोचननीर ॥ ७ ॥ जानतहूंअसस्वामिबिसारी ॥ फिरहिंते
काहेनहोहिंदुखारी ॥ एहिबिधिकहतरामगुनग्रामा ॥ पावाअनिर्बाच्यबिश्रामा ॥ पु
निसबकथाबिभीषनकही ॥ जेहिबिधिजनकसुतातहंरही ॥ तबहनुमंतकहासुनु
भ्राता ॥ देखीचहौंजानकीमाता ॥ जुगुतिबिभीषनसकलसुनाई ॥ चलेउपवनसुतबि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० ५ दाकराई॥करिसोईरूपगारउपुनिनहंवा॥वनअसोकसीतारहजहंवा॥देषिमनहिमि
ह्रकीन्हप्रनामा॥वैठहिंवीतिजातनिसिजामा॥क्रसतनुसीसजटाएकवेनी॥जपति
हृदयरघुपतिगुनश्रेनी॥दोहा॥ निजपदनयनदिएमनरामचरनमहुलीन॥परम
दुषीभापवनसुतदेषिजानकीदीन॥५॥तरुपल्लवमहुरहालुकाई॥करैविचारकरौं
काभाई॥तेहिअवसररावनुतहआवा॥संगनारिवहुकिएवनावा॥वहुविधिषलसीत
हिसमुझावा॥सामदानभयभेददेषावा॥कहरावनसुनुसुमुषिसयानी॥मंदोदरीआ
दिसवरानी॥तवअनुचरीकरौंपनमोरा॥एकवारविलोकुममवोरा॥त्ननधरिवोटक
हतिवैदेही॥सुमिरिअवधपतिपरमसनेही॥सुनुदसमुषषद्योतप्रकासा॥कवहुकिन ५
लिनीकरैविकासा॥असमनसमुझुकहतिजानकी॥षलसुधिनहिरघुवीरवानकी॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तवसठनेहहरिआनेहिमोही॥अधमनिलज्जलाजनहितोही॥दोहा॥ःआपुहिसुनिष
द्योतसमरामहिभानुसमान॥परुषबचनसुनिकाढिअसिबोलाअतिषिसियान॥८
सीतातैंममकृतअपमाना॥कटिहौंतवसिरकठिनकृपाना॥नाहितसपदिमानुमम
बानी॥सुमुषिहोतिनतजीवनहानी॥स्यामसरोजदामसमसुंदर॥प्रभुभुजकरिकरसम
दसकंधर॥सोभुजकंठकितवअसिघोरा॥सुनुसठअसप्रमानपनमोरा॥चंद्रहास
हरममपरितापं॥रघुपतिबिरहअनलसंजातं॥सीतलनिसितबहसिबरधारा॥कह
सीताहरुममदुषभारा॥सुनतबचनपुनिमारनधावा॥मयतनयाकहिनीतिबुझावा॥
कहेसिसकलनिसिचरिन्हबोलाई॥सीतहिबहुबिधित्रासहुजाई॥मासदिवसमहु
कहानमाना॥तौमैमारबिकाढिकृपाना॥दोहा॥ःभवनगएउदसकंधरइहांपिसा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं०

चिनिवृंद॥ सीतहि त्रासदियावहि धरहिं रूप वहु मंद॥१०॥ त्रिजटा नाम राक्षसी एका
राम चरन रति निपुन विवेका॥ सवन्हौ वोलि सुनाएसि सपना॥ सीतहि सेइ करहु हि
त अपना॥ सपने वानर लंका जारी॥ जातुधान सेना सव मारी॥ षर आरूढ नगन दससी
सा॥ मुंडित सिर षंडित भुज वीसा॥ एहि विधि सो दक्षिन दिसि जाई॥ लंका मनहु विभी
षन पाई॥ नगर फिरी रघुवीर दोहाई॥ तव प्रभु सीता वोलि पठाई॥ यह सपना मै कहौं
पुकारी॥ होइहि सत्य गए दिन चारी॥ तासु वचन सुनि ते सव डरी॥ जनकसुता के चर
नन्हि परी॥ दोहा॥ जहं तहं गई सकल तव सीता कर मन सोच॥ मास दिवस वीते मो
हि मारिहि निसिचर पोच॥११॥ त्रिजटा सन वोली कर जोरी॥ मातु विपति संगिनि तइ मो
री॥ तजौं देह करु वेगि उपाई॥ दुसह विरहु अव नहि सहि जाई॥ आनि काठ रचु चिताव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नाई॥मातुअनलपुनिदेहिलगाई॥सत्यकरहिममप्रीतिसयानी॥सुनैकोश्रवनसू
लसमबानी॥सुनतबचनपदगहिसमुझाएसि॥प्रभुप्रतापबलसुजससुनाएसि॥नि
सिनअनलमिलसुनुसुकुमारी॥असकहिसोनिजभवनसिधारी॥कहसीताबिधिभा
प्रतिकूला॥मिलिहिनपावकमिटिहिनसूला॥देखियतप्रगटगगनअंगारा॥अवनि
नआवतएकोतारा॥पावकमयससिस्रवतनआगी॥मानहुमोहिजानिहतभागी॥सु
नहिबिनयममबिटपअसोका॥सत्यनामकरुहरुममसोका॥नूतनकिसलयअन
लसमाना॥देहिअगिनिजनिकरहिनिदाना॥देषिपरमबिरहाकुलसीता॥सोछन
कपिहिकलपसमबीता॥सोरठा॥ः कपिकरिहृदयबिचारदीन्हिमुद्रिकाडारितब॥
जनुअसोकअंगारदीन्हहरषिउठिकरगहेउ॥१२॥तबदेषीमुद्रिकामनोहर॥राम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० ७

नाम अंकित अति सुंदर॥ चकृत चितव मुदरी पहिचानी॥ हरष विषाद हृदय अकुलानी
जीति को सकै अजय रघुराई॥ माया तें असि रचि नहि जाई॥ सीता मन विचार कर नाना॥
मधुर बचन बोलेउ हनुमाना॥ रामचंद्र गुन बरनै लागा॥ सुनतहि सीता कर दुष भागा॥
लागी सुनै श्रवन मन लाई॥ आदिहु तें सब कथा सुनाई॥ श्रवनामृत जेहि कथा सुहा
ई॥ कही सो प्रगट होति किन भाई॥ तब हनुमंत निकट चलि गयऊ॥ फिरि बैठी मन वि
समय भयऊ॥ राम दूत मै मातु जानकी॥ सत्य सपथ करुनानिधान की॥ यह मुद्रिका
मातु मै आनी॥ दीन्हि राम तुम्ह कहं सहिदानी॥ नर बानरहि संग कहु कैसे॥ कही क
था भै संगति जैसे॥ दोहा॥ कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन विश्वास॥ जाना मन क्र ७
म बचन यह कृपासिंधु कर दास॥१३॥ हरिजन जानि प्रीति अति गाढी॥ सजल नयन पु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लकावलिठाढी॥ बूडतविरहजलधिहनुमाना॥ भएहुतातमोकहुजलजाना॥ अव
कहुकुसलजाउंवलिहारी॥ अनुजसहितसुषभवनषरारी॥ कोमलचितकृपालरघु
राई॥ कपिकेहिहेतुधरीनिठुराई॥ सहजवानिसेवकसुषदायक॥ कवहुकसुरतिकर
तरघुनायक॥ कवहुनयनममसीतलताता॥ होइहहिनिरषिस्याममृदुगाता॥ वच
नुनआवनयनभरेवारी॥ अहहनाथहौंनिपटविसारी॥ देषिपरमविरहाकुलसीता
वोलाकपिमृदुवचनविनीता॥ मातुकुसलप्रभुअनुजसमेता॥ तवदुषदुषीसुकृपानि
केता॥ जनिजननीमानहुजियऊना॥ तुम्हतेप्रेमुरामकेदूना॥ दोहा॥ रघुपतिकरसं
देसुअवसुनुजननीधरिधीर॥ असकहिकपिगदगदभएउभरेविलोचननीर॥१४॥
कहेउरामवियोगतवसीता॥ मोकहुसकलभएविपरीता॥ नवतरुकिसलयमनहु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० ८

कृसानु॥ कालनिसासम निसि ससि भानु॥ कुवलय विपिन कुंत वन सरिसा॥ वारिद तपत
तेल जनु वरिसा॥ जे हित रहे करत तेइ पीरा॥ उरग स्वास सम त्रिविध समीरा॥ कहेहु
ते कछु दुख घटि होई॥ काहि कहौं यह जान न कोई॥ तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा॥ जान
त प्रिया एक मन मोरा॥ सो मन सदा रहत तोहि पाहीं॥ जानु प्रीति रस एतनेहि माहीं॥ प्र
भु संदेस सुनत वैदेही॥ मगन प्रेम तन सुधि नहि तेही॥ कह कपि हृदय धीर धरु माता॥
सुमिरु राम सेवक सुखदाता॥ उर आनहु रघुपति प्रभुताई॥ सुनि मम वचन तजहु कदरा
ई॥ दोहा॥ निसिचर निकर पतंग सम रघुपति वान कृसानु॥ जननी हृदय धीर धरु
जरे निसाचर जानु॥१५॥ जौं रघुवीर होति सुधि पाई॥ करते नहि विलंब रघुराई॥ राम वा ८
न रवि उये जानकी॥ तम वरूथ कह जातुधान की॥ अवहि मातु मैं जाउं लवाई॥ प्रभु

आयसुनहिरामदोहाई॥कछुकदिवसजननीधरुधीरा॥कपिनसहितअइहहिरघु
वीरा॥निसिचरमारितोहिलेजैहहि॥तिहपुरनारदादिजसगेहहि॥हैसुतक
पिसवतुहहिसमाना॥जातुधानअतिभटवलवाना॥मोरहृदयपरमसंदेहा॥सुनिक
पिप्रगटकीन्हिनिजदेहा॥कनकभूधराकारसरीरा॥समरभयंकरअतिवलवीरा॥
सीतामनभरोसतवभएउ॥पुनिलघुरूपपवनसुतलएउ॥दोहा॥ सुनुमातासाषा
मृगनहिवलवुद्धिविसाल॥प्रभुप्रतापतेगरुडहिषाइपरमलघुव्याल॥१६॥मनसं
तोषसुनतकपिवानी॥भगतिप्रतापतेजवलसानी॥आसिषदीन्हिरामप्रियजाना॥
होहुतातवलसीलनिधाना॥अजरअमरगुननिधिसुतहोहू॥करहुवहुतरघुनाय
कछोहू॥करहुकृपाप्रभुअससुनिकाना॥निर्भरप्रेममगनहनुमाना॥वारवार॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० १८ रसिपदसीसा॥ बोलाबचनजोरिकरकीसा॥ अबकृतकृत्यभयउँमैमाता॥ आसिषत
वअमोघविख्याता॥ सुनहुमातुमोहिअतिसयभूखा॥ लागिदेखिसुंदरफलरूखा॥ सुनुसु
तकरहिंविपिनरखवारी॥ परमसुभटरजनीचरभारी॥ तिन्हकरभयमातामोहिनाहीं॥
जौंतुम्हसुखमानहुमनमाहीं॥ दोहा॥ देखिबुद्धिबलनिपुनकपिकहेउजानकींजाहु
रघुपतिचरनहृदयधरितातमधुरफलखाहु॥१७॥ चलेउनाइसिरुपैठेउबागा॥ फल
खाएसितरुतोरैंलागा॥ रहेतहांबहुभटरखवारे॥ कछुमारेसिकछुजाइपुकारे॥ नाथ
एकआवाकपिभारी॥ तेहिंअसोकवाटिकाउजारी॥ खायेसिफलअरुविटपउपारे॥
रक्षकमर्दिमर्दिमहिडारे॥ सुनिरावनपठएभटनाना॥ तिन्हहिंदेखिगर्जेउहनुमा १८
ना॥ सबरजनीचरकपिसंघारे॥ गएपुकारतकछुअधमारे॥ पुनिपठएउतेहिंअक्ष

कुमारा॥ चलासंगलैसुभटअपारा॥ आवतदेषिविटपगहितर्जा॥ ताहिनिपातिमहा
धुनिगर्जा॥ दोहा॥ः कछुमारेसिकछुमर्देसिकछुमिलएसिधरिधूरि॥ कछुपुनिजाइ
पुकारेप्रभुमर्कटवलभूरि॥१८॥ सुनिसुतवधलंकेसरिसाना॥ पठएसिमेघनादवलवा
ना॥ मारसिजनिसुतवांधेसुताही॥ देषियकपिहिकहाकरआही॥ चलाइंद्रजितअतुलि
तजोधा॥ वंधुनिधनसुनिउपजाक्रोधा॥ कपिदेषादारुनभटआवा॥ कटकटाइगर्जा
अरुधावा॥ अतिविशालतरुएकउपारा॥ विरथकीन्हलंकेसकुमारा॥ रहेमहाभटता
केसंगा॥ गहिगहिकपिमर्दइनिजअंगा॥ तिन्हहिनिपातिताहिसनवाजा॥ भिरेजुग
लमानहुगजराजा॥ मुठिकामारिचढातरुजाई॥ ताहिएकछनमुरछाआई॥ उठि
वहोरिकीन्हेसिवहुमाया॥ जीतिनजायप्रभंजनजाया॥ दोहा॥ः ब्रह्मअस्त्रतेहिसा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० १०

धाकपिमनकीन्हबिचार॥जौंनब्रह्मसरमानौंमहिमामिटैअपार॥१९॥ब्रह्मबानकपि
कहुँतेहिमारा॥परतिहुँबारकटकसंघारा॥तेहिदेखाकपिमुरछितभएउ॥नागपास
बांधेसिलैगएउ॥जासुनामजपिसुनहुभवानी॥भवबंधनकाटहिनरज्ञानी॥तासुदू
तकिबंधतरुआवा॥प्रभुकारिजलगिकपिहिबंधावा॥कपिबंधनसुनिनिसिचरधाए॥
कौतुकलागिसभासबआए॥दसमुखसभादीखिकपिजाई॥कहिनजाइकछुअतिप्र
भुताई॥करजोरेसुरदिसिपबिनीता॥भ्रकुटिबिलोकतसकलसभीता॥देखिप्रतापनक
पिमनसंका॥जिमिअहिगनमहुँगरुडअसंका॥दोहा॥:कपिहिबिलोकिदसाननबि
हसाकहिदुर्बाद॥सुतबधसुरतिकीन्हिपुनिअपजाहृदयबिषाद॥२०॥कहलंकेसक १०
वनतैंकीसा॥केहिकेंबलघालेहिबनखीसा॥कीधौंश्रवनसुनेहिनहिमोही॥देखौंअति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

असंक सठ तोही॥ मारे निसिचर केहि अपराधा॥ कहु सठ तोहि न प्रान कै बाधा॥ सुनु रा
वन ब्रह्मांड निकाया॥ पाइ जासु बल बिरचति माया॥ जाके बल बिरंचि हरि ईसा॥ पाल
त सृजत हरत दससीसा॥ जा बल सीस धरत सहसानन॥ अंडकोस समेत गिरि कान
न॥ धरे जो बिबिध देह सुरत्राता॥ तुम्ह से सठन सिखावनु दाता॥ हर कोदंड कठिन जेहि
भंजा॥ तेहि समेत नृप दल मद गंजा॥ खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली॥ बधे सकल अतु
लित बलसाली॥ दोहा॥ जाके बल लवलेस ते जितेहु चराचर झारि॥ तासु दूत मैं जा क
रि हरि आनेहु प्रिय नारि॥२१॥ जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई॥ सहसबाहु सन परी लराई॥
समर बालि सन करि जसु पावा॥ सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा॥ खायउँ फल प्रभु
लागी भूखा॥ कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा॥ सब कें देह परम प्रिय स्वामी॥ मारहिं मोहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं०
२२
कुमार गगामी॥ जिन्ह मोहि मारा तें मैं मारे॥ तेहि पर बांधे उतनय तुम्हारे॥ मोहि न
कछु बांधे कर लाजा॥ कीन्ह चहौं निज प्रभु कर काजा॥ बिनती करौं जोरि कर रावन॥ सुन
हु मान तजि मोर सिषावन॥ देषहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी॥ भ्रम तजि भजहु भगत
भय हारी॥ जाके डर अति काल डेराई॥ जो सुर असुर चराचर षाई॥ तासो बयरु कबहु
नहि कीजे॥ मोरे कहे जानकी दीजे॥ दोहा॥ प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु षरा
रि॥ गए सरन प्रभु राषिहैं तव अपराध बिसारि॥ २१॥ राम चरन पंकज उर धरहू॥ लंका
अचल राज तुम्ह करहू॥ रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका॥ तेहि ससि महु जनि होहु
कलंका॥ राम नाम बिनु गिरा न सोहा॥ देषु बिचारि त्यागि मद मोहा॥ बसन हीन नहि
सोह सुरारी॥ सब भूषन भूषित बर नारी॥ राम बिमुष संपति प्रभुताई॥ जाइ रही पा २२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ई विनु पाई ॥ सरित मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं ॥ वरषि गए पुनि तवहि सुषाहीं ॥ सुनु
दसकंठ कहौं पन रोपी ॥ विमुष राम त्राता नहि कोपी ॥ संकर सहस विष्नु अज तोही
सकहि न राषि राम कर द्रोही ॥ दोहा ॥ मोह मूल वहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमा
न ॥ भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान ॥ २३ ॥ जदपि कही कपि अति हित वानी
भगति विवेक विरति नय सानी ॥ वोला विहसि महा अभिमानी ॥ मिला हमहि कपि गुरु
वड ज्ञानी ॥ मृत्यु निकट आई षल तोही ॥ लागेसि अधम सिषावन मोही ॥ उलटा
होइहि कह हनुमाना ॥ मतिभ्रम तोहि प्रगट मै जाना ॥ सुनि कपि वचन वहुत षिं
सिआना ॥ वेगि न हरहु मूढ कर प्राना ॥ सुनत निसाचर मारन धाये ॥ सचिवन्ह सहि
त विभीषन आये ॥ नाइ सीस करि विनय वहूता ॥ नीति विरोध न मारिय दूता ॥ आन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मुं० १२ दंडकछुकरियगोसांई॥सवहीकहामंत्रभलभाई॥सुनतविहसिवोलादसकंधर॥अं
गभंगकरिपठइअवंदर॥दोहा॥ कपिकेममतापुछपरसवहिकहौसमुझाइ॥तेलवो
रिपटवांधिपुनिपावकदेहुलगाइ॥२४॥पुछहीनवानरतहंजाइहि॥तवसठनिजनाथ
हिलैआइहि॥जिन्हकेकीन्हेसिवहुतवडाई॥देखौमैतिन्हकेप्रभुताई॥वचनसुनत
कपिमनमुसुकाना॥भइसहाइसारदमैजाना॥जातुधानसुनिरावनवचना॥लागेर
चैमूढसोइरचना॥रहाननगरवसनघ्रततेला॥वाढीपुछकीन्हकपिषेला॥कौतुक
कहंआएपुरवासी॥मारहिचरनकरहिवहुहांसी॥वाजहिढोलदेहिसवतारी॥नगरफे
रिपुनिपुछप्रजारी॥पावकजरतदेषिहनुमंता॥भए उपरमलघुरूपतुरंता॥निवुकिच १२
ढेउकपिकनकअटारी॥भईसभीतनिसाचरनारी॥दोहा॥ हरिप्रेरिततेहिअवसर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लेमरुत उनचास॥ अट्टहास करि गर्जा कपि बढि लाग अकास॥२५॥ देह बिसाल परम
हरुआई॥ मंदिर ते मंदिर चढ धाई॥ जरइ नगर भा लोग बिहाला॥ झपट लपट बहु को
टि कराला॥ तात मात हा सुनिय पुकारा॥ एहि अवसर को हमहि उबारा॥ हम जो कहा य
ह कपि नहि होई॥ बानर रूप धरे सुर कोई॥ साधु अवग्या कर फल ऐसा॥ जरै नगर अनाथ
कर जैसा॥ जारा नगर निमिष एक माही॥ एक बिभीषन कर गृह नाही॥ ता कर दूत अ
नल जेहि सिरजा॥ जरा न सो तेहि कारन गिरिजा॥ उलटि पलटि लंका सब जारी॥ कूदि
परा पुनि सिंधु मझारी॥ दोहा॥ पूछ बुझाई खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि॥ जनक सुता
के आगे ठाढ भए कर जोरि॥२६॥ मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा॥ जैसे रघुनायक मोहि
दीन्हा॥ चूडामनि उतारि तब दइउ॥ हरष समेत पवनसुत लइउ॥ कहे तात अस मो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं०
२३ रप्रनामा॥ सवप्रकारप्रभुपूरनकामा॥ दीनदयालविरिदुसंभारी॥ हरहुनाथममसंकट
भारी॥ तातसक्रसुतकथासुनाएहु॥ वानप्रतापप्रभुहिसमुझाएहु॥ मासदिवसमहुँना
थनआवा॥ तोपुनिमोहिजियतनहिपावा॥ कहुकपिकेहिविधिराखौंप्राना॥ तुमहूता
तकहतअवजाना॥ तोहिदेखिसीतलभइछाती॥ पुनिमोकहुँसोदिनसोराती॥ दोहा॥
जनकसुतहिसमुझाइकरिवहुविधिधीरजुदीन्ह॥ चरनकमलसिरुनाइकपिगवन
रामपहिंकीन्ह॥ २७॥ चलतमहाधुनिगर्जेसिभारी॥ गर्भस्रवहिंसुनिनिसिचरनारी॥
नाघिसिंधुएहिपारहिआवा॥ सवदकिलकिलाकपिन्हसुनावा॥ हरषेसवविलोकि
हनुमाना॥ नूतनजन्मकपिन्हतवजाना॥ मुखप्रसन्नतनतेजविराजा॥ कीन्हेसिराम २३
चंद्रकरकाजा॥ मिलेसकलअतिभएसुखारी॥ तलफतमीनपावजिमिवारी॥ चलेहर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

षिर रघुनायक पासा॥ पूछत कहत नवल इतिहासा॥ तब मधुवन भीतर सब आए॥ अं
गद संमत मधु फल षाए॥ रषवारे जब बरजे लागे॥ मुष्टि प्रहार हनत सब भागे॥ दोहा॥
जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज॥ सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज॥ २८
जौं न होति सीता सुधि पाई॥ मधुवन के फल सकहि कि षाई॥ एहि बिधि मन बिचार कर रा
जा॥ आइ गए कपि सहित समाजा॥ आइ सबनि नावा पद सीसा॥ मिलेउ सबन्हि अति
प्रीति कपीसा॥ पूछी कुसल कुसल पद देषी॥ राम कृपा भा काजु बिशेषी॥ नाथ काजु की
न्हेउ हनुमाना॥ राषे सकल कपिन्ह के प्राना॥ सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेउ॥ कपिन्ह
सहित रघुपति पहि चलेउ॥ राम कपिन्ह जब आवत देषा॥ किए काजु मन हरष बिशे
षा॥ फटिक सिला बैठे दोउ भाई॥ परे सकल कपि चरनन्हि जाई॥ दोहा॥ प्रीति सहित

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सबभेटेरघुपतिकरुनापुंज॥ पूछीकुसलनाथअबकुसलदेखिपदकंज॥२९॥ जामवं
तकहसुनुरघुराया॥ जापरनाथकरहुतुम्हदाया॥ ताहिसदासुभकुसलनिरंतर॥ सु
रनरमुनिप्रसन्नताऊपर॥ सोइबिजईबिनईगुनसागर॥ तासुसुजसत्रैलोकउजा
गर॥ प्रभुकीकृपाभयउसबकाजू॥ जन्महमारसुफलभाआजू॥ नाथपवनसुतकी
न्हिजोकरनी॥ सहसहुमुखनजाइसोबरनी॥ पवनतनयकेचरितसुहाए॥ जामवंत
रघुपतिहिसुनाए॥ सुनतकृपानिधिमनअतिभाए॥ पुनिहनुमानहरषिहियँला
ए॥ कहहुतातकेहिभाँतिजानकी॥ रहतिकरतिरच्छास्वप्रानकी॥ दोहा॥ नामपाहरू
रातिदिनध्यानतुम्हारकपाट॥ लोचननिजपदजंत्रितजाहिंप्रानकेहिबाट॥३०॥ चल
तमोहिचूडामनिदीन्ही॥ रघुपतिहृदयलाइसोइलीन्ही॥ नाथजुगललोचनभरिबा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

री॥ वचनकहेकछुजनककुमारी॥ अनुजसमेतगहेहुप्रभुचरना॥ दीनवंधुप्रनतार
तिहरना॥ मनक्रमवचनचरनअनुरागी॥ केहिअपराधनाथहौंत्यागी॥ अवगुनए
कमोरमैंजाना॥ विछुरतप्राननकीन्हपयाना॥ नाथसोनयनन्हिकरअपराधा॥ नि
सरतप्रानकरहिहठिवाधा॥ विरहअगिनितनुतूलसमीरा॥ स्वासजरैछनमाहिंसरी
रा॥ नयनस्रवहिजलुनिजहितलागी॥ जरैंनपावदेहविरहागी॥ सीताकैअतिविपति
विसाला॥ विनहिकहेभलदीनदयाला॥ दोहा॥ निमिषनिमिषकरुनानिधिजा
हिंकलपसमवीति॥ वेगिचलियप्रभुआनियभुजवलखलदलजीति॥ ३१॥ सुनिसीता
दुखप्रभुसुखअयना॥ भरिआएजलराजिवनयना॥ वचनकायमनममगतिजाही॥
सपनेहुवूझियविपतिकिताही॥ कहहनुमंतविपतिप्रभुसोई॥ जवतवसुमिरनभजे

सुं०
५५

ननहोई॥केतिकवातप्रभुजातुधानकी॥रिपुहिजीतिआनवीजानकी॥सुनुकपितोहिस
मानउपकारी॥नहिकोउसुरनरमुनितनुधारी॥प्रतिउपकारकरौंकातोरा॥सनमुषहो
इनसकतमनमोरा॥सुनुसुततोहिउरिनमैनाहीं॥देषेउकरिविचारमनमाहीं॥पुनि
पुनिकपिहिचितवसुरत्राता॥लोचननीरपुलकअतिगाता॥दोहा॥सुनिप्रभुवचन
विलोकिमुषगातहरषिहनुमंत॥चरनपरेउप्रेमाकुलत्राहित्राहिभगवंत॥३१॥वारवा
रप्रभुचहैउठावा॥प्रेममगनतेहिउठवनभावा॥प्रभुकरपंकजकपिकेसीसा॥सुमिरि
सोदसामगनगौरीसा॥सावधानमनकरिपुनिसंकर॥लागेकहनकथाअतिसुंदर
कपिउठाइप्रभुहृदयलगावा॥करगहिपरमनिकटवैठावा॥कहुकपिरावनपालि ५५
तलंका॥केहिविधिदहेहुदुर्गअतिवंका॥प्रभुप्रसन्नजानाहनुमाना॥वोलावचन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विगतअभिमाना॥ सायामृगकैवडिमनुमाई॥ सायातेसायापरजाई॥ नाथिविसिंधुह्

ठकपुरजारा॥ निसिचरगनवधिविपिनउजारा॥ सोसवतवप्रतापरघुराई॥ नाथनक

छुमोरिप्रभुताई॥ दोहा॥ ताकहुप्रभुकछुअगमनहिजापरतुम्हअनकूल॥ तव

प्रतापवडवानलहिजारिसकैखलतूल॥ ३३॥ नाथभगतिअतिसुखदायनी॥ देहु

कृपाकरिअनपायनी॥ सुनिप्रभुपरमसरलकपिवानी॥ एवमस्तुतवकहेउभवानी॥

उमारामसुभाउजेहिजाना॥ ताहिभजनतजिँचरनभगतिसोइपावा॥ सुनिप्रभुव

चनकहहिकपिवृंदा॥ जयजयजयकृपालसुखकंदा॥ तवरघुपतिकपिपतिहिबो

लावा॥ कहहुचलेकरकरहुवनावा॥ अवविलंवकेहिकारनकीजे॥ तुरतकपिन्हके

हुआयसुदीजे॥ कौतुकदेखिसुमनवहुवरषी॥ नभतेभवनचलेसुरहरषी॥ दोहा॥

भावनआना॥ यहसंवादजासुउरआवा॥ रघुपति ६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लं०
९९

कपिपतिवेगिवोलाएआएजूथपजूथ॥नानावरनअतुलवलवानरभालुवरूथ॥५५
प्रभुपदपंकजनावहिंसीसा॥गर्जहिंभालुमहावलकीसा॥देषीरामसकलकपिसेना।
चितइकृपाकरिराजिवनयना॥राममृकृपावलपाइकपिंदा॥भएपछजुतमनहुगिरिं
दा॥हरषिरामतवकीन्हपयाना॥सगुनभएसुंदरसुभनाना॥जासुसकलमंगलमय
कीती॥तासुपयानसगुनयहनीती॥प्रभुपयानजानावैदेही॥फरकिवामअंगजनु
कहिदेही॥जोइजोइसगुनजानकिहिहोई॥असगुनभएउरावनहिसोई॥चला
कटककोवरनैपारा॥गर्जहिवानरभालुअपारा॥नषआयुधगिरिपादपधारी॥च
लेगगनमहिइछाचारी॥केहरिनादभालुकपिकरहीं॥डगमगाहिदिग्गजचिक्क ९९
रहीं॥छंद॥ चिक्करहिदिग्गजडोलमहिगिरिलोलसागरषरभरे॥मनहरषसदिन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करसोमसुरमुनिनागकिंन्नरदुषदरे॥कटकटहिमर्कटविकटभटवहुकोटिको
टिन्हधावहीं॥जयरामप्रवलप्रतापकोसलनाथगुनगनगावहीं॥सहिसकनभा
रउदारअहिपतिवारवारहिमोहई॥गहिदसनपुनिपुनिकमठपृष्टकठोरसोकि
मिसोहई॥रघुवीररुचिरपयानप्रस्थितिजानिपरमसुहावनी॥जनुकमठषर्पर
सर्पराजसोलिषतअविचलपावनी॥दोहा॥: एहिविधिजायकृपानिधिउतरे
सागरतीर॥जहँतहँलागेषानफलभालुविपुलकपिभीर॥३५॥उहांनिसाचररह
हिंससंका॥जवतेजारिगएउकपिलंका॥निजनिजगृहसवकरहिविचारा॥नहि
निसिचरकुलकेरउवारा॥जासुदूतवलवरनिनजाई॥तेहिआएपुरकवनभलाई
दूतिन्हसनसुनिपुरजनवानी॥मंदोदरीअधिकअकुलानी॥रहसिजोरिकरपति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं०
३७

पदलागी॥ बोलीबचननीतिरसपागी॥ कंतकरषहरिसनपरिहरहू॥ मोरकहाअति
हितहियधरहू॥ समुझतजासुदूतकैकरनी॥ स्रवहिंगर्भरजनीचरघरनी॥ तासुनारि
निजसचिवबोलाई॥ पठवहुकंतजौंचहहुभलाई॥ तवकुलकमलविपिनदुषदाई॥
सीतासीतनिसासमआई॥ सुनहुनाथसीताविनुदीन्हे॥ हितनतुम्हारसंभुअज
कीन्हे॥ दोहा॥ रामवानअहिगनसरिसनिकरनिसाचरभेक॥ जवलगिग्रसतन
तवलगिजतनकरहुतजिटेक॥३६॥ श्रवनसुनीसठताकरवानी॥ विहसाजगतवि
दितअभिमानी॥ सभयसुभावनारिकरसाचा॥ मंगलमहुभयमनअतिकाचा॥
जौंआवैमर्कटकटकाई॥ जियहिविचारेनिसिचरषाई॥ कंपहिलोकपजाकीत्रासा ३७
तासुनारिसभीतवडिहासा॥ असकहिविहसिताहिउरलाई॥ चलेउसभाममता

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अधिकाई॥ मंदोदरी हृदय कर चिंता॥ भयउ कंत पर विधि विपरीता॥ बैठे सभा
खबरि असि पाई॥ सिंधु पार सेना सब आई॥ बूझेसि सचिव उचित मत कहहू॥ ते सब हंसे
मष्ट करि रहहू॥ जितहु सुरासुर तब श्रम नाहीं॥ नर बानर केहि लेखे माहीं॥ दोहा॥
सचिव वैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहि भय आस॥ राज धर्म तन तीनि कर होइ वेगही
नास॥ ३७॥ सोइ रावन कहु वनी सहाई॥ अस्तुति करहि सुनाइ सुनाई॥ अवसर
जानि विभीषनु आवा॥ भ्राता चरन सीसु तेहि नावा॥ पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन
बोला बचन पाइ अनुसासन॥ जौ कृपाल पूछेहु मोहि बाता॥ मति अनुरूप कहौं हित
ताता॥ जो आपन चाहइ कल्याना॥ सुजस सुमति सुभ गति सुख नाना॥ सो परनारि
लिलार गोसांईं॥ तजै चौथि के चंद कि नाईं॥ चौदह भुवन एक पति होई॥ भूतद्रोह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिष्ठै नहिं सोई॥ गुन सागर नागर नर जोउ॥ अलप लोभ भल कहै न कोउ॥ दोहा॥
काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ॥ सब परिहरि रघुवीरहि भजहु भजहिं जे
हि संत॥ ३८॥ तात राम नहि नर भूपाला॥ भुवनेश्वर कालेहु कर काला॥ ब्रह्म अनामय
अज भगवंता॥ व्यापक अजित अनादि अनंता॥ गो द्विज धेनु देव हितकारी॥ कृपासिंधु
मानुष तनुधारी॥ जन रंजन भंजन षल ब्राता॥ वेद धर्म रक्षक सुनु भ्राता॥ ताहि बयरु त
जि नाइय माथा॥ प्रनतारति भंजन रघुनाथा॥ देहु नाथ प्रभु कहु वैदेही॥ भजहु राम
विनु हेतु सनेही॥ सरन गए प्रभु ताहु न त्यागा॥ विश्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा॥ जा
सु नाम त्रय ताप नसावन॥ सोइ प्रभु प्रगट समुझु जिय रावन॥ दोहा॥ वार वार पद ला १८
गउं विनय करौं दससीस॥ परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस॥ मुनि पुलस्ति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निजसिष्यसनकहिपठईयहवात॥तुरतसोमैप्रभुसनकहीपाइसुअवसरतात॥३९
माल्यवंतअतिसचिवसयाना॥तासुवचनसुनिअतिसुषमाना॥तातअनुजतवनीति
विभूषन॥सोउरधरहुजोकहतविभीषन॥रिपुउतकर्षकहतसठदोउ॥दूरिनकर
हुइहाँहैकोउ॥माल्यवंतगृहगएउवहोरी॥कहइविभीषनपुनिकरजोरी॥सुम
तिकुमतिसबकेउरहई॥नाथपुराननिगमअसकहई॥जहाँसुमतितहँसंपतिना
ना॥जहाँकुमतितहँविपतिनिदाना॥तवउरकुमतिवसीविपरीता॥हितअनहि
तमानहुरिपुप्रीता॥कालरातिनिसिचरकुलकेरी॥तेहिसीतापरप्रीतिघनेरी॥
दोहा॥ः तातचरनगहिमागौराषहुमोरदुलार॥सीतादेहुरामकहुँअहितनहो
इतुम्हार॥४०॥वुधपुरानश्रुतिसंमतवानी॥कहीविभीषननीतिवषानी॥सुनत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० १८ दसानन उठा रिसाई॥ षल तोहि निकट म्रत्यु अब आई॥ जियसि सदा सठ मोर जिआ
वा॥ रिपु कर पक्ष मूढ तोहि भावा॥ कहसि न षल अस को जग माहीं॥ भुजबल जाहि जि
ता मैं नाहीं॥ मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती॥ सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती॥ अस क
हि कीन्हेसि चरन प्रहारा॥ अनुज गहे पद बारहि बारा॥ उमा संत कै इहइ बडाई॥ मंद
करत जो करै भलाई॥ तुम्ह पितु सरिस भलेहि मोहि मारा॥ राम भजे हित नाथ तुम्हा
रा॥ सचिव संग लै नभ पथ गएऊ॥ सबहि सुनाइ कहत अस भएऊ॥ दोहा॥ राम सत्य
संकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि॥ मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि षोरि॥४१॥ अ
व सकहि चला बिभीषन जबहीं॥ आयुहीन भए सब तबहीं॥ साधु अवज्ञा तुरत भवानी
कर कल्यान अषिल कै हानी॥ रावन जबहि बिभीषन त्यागा॥ भएउ बिभव बिनु तब १८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हिअभागा॥चलेउहाँरघुनायकपाहीं॥करतमनोरथबहुमनमाहीं॥देषिहौं
जाइचरनजलजाता॥अरुनमृदुलसेवकसुषदाता॥जेपदपरसितरीरिषिनारी॥दं
डककाननपावनकारी॥जेपदजनकसुताउरलाए॥कपटकुरंगसंगधरधाए॥हर
उरसरसरोजपदजेई॥अहोभाग्यमैदेषिहौंतेई॥दोहा॥जिन्हपायन्हकेपादुक
न्हिभरतरहेमनलाइ॥तेपदआजुबिलोकिहौंइन्हनयनन्हिअबजाइ॥४१॥एहि
बिधिकरतसप्रेमबिचारा॥आएउसपदिसिंधुकेपारा॥कपिन्हबिभीषनआवतदे
षा॥जानाकोउरिपुदूतबिशेषा॥ताहिराषिकपीसपहिंआए॥समाचारसबताहि
सुनाए॥कहसुग्रीवसुनहुरघुराई॥आवामिलनदसाननभाई॥कहप्रभुसषाबू
झिएकाहा॥कहैकपीससुनहुनरनाहा॥जानिनजायनिसाचरमाया॥कामरूप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० केहिकारनआया।।भेदहमारलेनसठआवा।।राषियबांधिमोहिअसभावा।।सषानी
४० तितुम्हनीकिबिचारी।।ममपनसरनागतभयहारी।।सुनिप्रभुबचनहरषहनुमाना।
सरनागतबच्छलभगवाना।।दोहा।।सरनागतकहुंजेतजहिनिजअनहितअनु
मानि।।तेनरपावंरपापमयतिन्हहिबिलोकतहानि।।४३।।कोटिबिप्रबधलागहिंजा
हू।।आएसरनतजौंनहिताहू।।सनमुषहोइजीवमोहिजबहीं।।जन्मकोटिअघना
सहितबहीं।।पापवंतकरसहजसुभाउ।।भजनमोरतेहिभाउनकाऊ।।जौंपैदुष्टहृ
दयसोहोई।।मोरेसनमुषआवकिसोई।।निर्मलमनजनसोमोहिपावा।।मोहिक
पटछलछिद्रनभावा।।भेदलेनपठवादससीसा।।तवहुनकछुभयहानिकपीसा ४०
जगमहुसषानिसाचरजेते।।लछिमनहनइनिमिषमहुतेते।।जौंसभीतआवासर

नाई॥रषिहैंतमनाहिप्रानकीनाई॥दोहा॥ उभयभांतितेहिआनहुहसिकहक्रपा
निकेत॥जयक्रपालकहिकपिचलेअंगदहनूसमेत॥४४॥सादरतेहिआगेकरिबा
नर॥चलेजहांरघुपतिकरुनाकर॥दूरिहितेदेषेदोउभ्राता॥नयनानंददानकेदा
ता॥बहुरिरामछबिधामबिलोकी॥रहेउठटुकिएकटकपलरोकी॥भुजप्रलंबकंजा
रुनलोचन॥स्यामलगातप्रनतभयमोचन॥सिंहकंधआयतउरसोहा॥आननअ
मितमदनमनमोहा॥नयननीरपुलकितअतिगाता॥मनधरिधीरकहीम्रदुबा
ता॥नाथदसाननकरमैंभ्राता॥निसिचरबंसजनमसुरत्राता॥सहजपापप्रियताम
सदेहा॥जथाउलूकहितमपरनेहा॥दोहा॥ श्रवनसुजससुनिआयउँप्रभुभंजन
भवभीर॥त्राहित्राहिआरतिहरनसरनसुषदरघुबीर॥४५॥असकहिकरतदंडवत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० ४१ देषा॥ तुरत उठे प्रभु हरष विशेषा॥ दीन वचन सुनि प्रभु मन भावा॥ भुज विसाल गहि हृ-
दय लगावा॥ अनुज सहित मिलि ढिग वैठारी॥ वोले वचन भगत भय हारी॥ कहु लंके-
स सहित परिवारा॥ कुसल कुठाहर वास तुम्हारा॥ षल मंडली वसहु दिन राती॥ सषा ध-
र्म निवहइ केहि भांती॥ मै जानौं तुम्हारि सव रीती॥ अति नय निपुन न भाव अनीती॥ व-
रु भल वास नरक कर ताता॥ दुष्ट संग जनि देइ विधाता॥ अव पद देषि कुसल रघुराया॥
जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया॥ दोहा॥ तव लगि कुसल न जीव कहुं सपनेहु मन वि-
श्राम॥ जव लगि भजत न राम कहुं सोक धाम तजि काम॥४६॥ तव लगि हृदय वसत ष-
ल नाना॥ लोभ मोह मत्सर मद माना॥ जव लगि उर न वसत रघुनाथा॥ धरे चाप साय- ४१
क कटि भाथा॥ ममता तरुन तमी अंधियारी॥ राग द्वेष उलूक सुषकारी॥ तव लगि वसति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जीवमनमाहीं॥जबलगिप्रभुप्रतापरविनाहीं॥अवमैकुसलमिटेभयभारे॥देखिरामप
दकमलतुम्हारे॥तुम्हकृपालजापरअनुकूला॥तेहिनव्यापत्रिविधिभवसूला॥मैं
निसिचरअतिअधमसुभाउ॥सुभआचरनकीन्हनहिकाउ॥जासुरूपमुनिध्याननन
आवा॥तेहिप्रभुहरषिहृदयमोहिलावा॥दोहा॥ अहोभाग्यममअमितअतिरामकृ
पासुखपुंज॥देखिउनयनविरंचिसिवसेव्यजुगलपदकंज॥४७॥सुनहुसखानिजक
हउसुभाउ॥जानभुसुंडिसंभुगिरिजाउ॥जौनरहोइचराचरद्रोही॥आवैसरनसभ
यतकिमोही॥तजिमदमोहकपटछलनाना॥करौंसद्यतेहिसाधुसमाना॥जननीज
नकबंधुसुतदारा॥तनुधनुभवनसुहृदपरिवारा॥सबकैममतातागबटोरी॥ममपदम
नहिबांधबरिडोरी॥समदरसीइछाकछुनाहीं॥हरषसोकभयनहिंमनमाहीं॥अस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० सज्जनममउरवसकैसे॥लोभीहृदयवसैधनजैसे॥तुम्हसारिखेसंतप्रियमोरे॥धरौंदेह
२२ नहिआननिहोरे॥दोहा॥ःसगुनोपासकपरमहितनिरतनीतिदिढनेम॥तेनरप्रान
समानममजिन्हकेद्विजपदप्रेम॥४८॥सुनुलंकेससकलगुनतोरे॥तातेतुम्हअतिस
यप्रियमोरे॥रामवचनसुनिवानरजूथा॥सकलकहहिजयकृपावरूथा॥सुनतविभी
षनप्रभुकेवानी॥नहिअघातश्रवनामृतजानी॥पदअंवुजगहिवारहिवारा॥हृदय
समातनप्रेमअपारा॥सुनहुदेवसचराचरस्वामी॥प्रनतपालउरअंतरजामी॥उरकछु
प्रथमवासनारही॥प्रभुपदप्रीतिसरितसोवही॥अवकृपालनिजभगतिपावनी॥दे
हुसदासिवमनभावनी॥एवमस्तुकहिप्रभुरनधीरा॥मागातुरतसिंधुकरनीरा॥जद २२
पिसषातवइछानाही॥मोरदरसअमोघजगमाही॥असकहिरामतिलकतेहिसारा॥

सुमनव्रष्टिनभभईअपारा॥ दोहा ॥: रावनक्रोधअनलनिजस्वाससमीरप्रचंड॥ज
रतविभीषनराष्यादीन्हेउराजुअषंड॥ जोसंपतिसिवरावनहिदीन्हिदिए दसमाथ॥
सोइसंपदाविभीषनहिसकुचिदीन्हिरघुनाथ॥४९॥ असप्रभुछाडिभजहिजेआना॥
तेनरपसुविनुपुछविषाना॥ निजजनजानिताहिअपनावा॥ प्रभुसुभाउकपिकुलम
नभावा॥ पुनिसर्वज्ञसर्वउरवासी॥ सर्वरूपसवरहितउदासी॥ वोलेवचननीतिप्रतिपा
लक॥ कारनमनुजदनुजकुलघालक॥ सुनुकपीसलंकापतिवीरा॥ केहिविधितरियज
लधिगंभीरा॥ संकुलमकरउरगझषजाती॥ अतिअगाधदुस्तरसवभांती॥ कहलंकेस
सुनहुरघुनायक॥ कोटिसिंधुसोषकतवसायक॥ जद्यपितदपिनीतिअसगाई॥ विनय
करियसागरसनजाई॥ दोहा ॥: प्रभुतुम्हारकुलगुरजलधिकहिहिउपायविचारि॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० २३ बिनुप्रयाससागरतरिहिसकलभालुकपिधारि॥५०॥सखाकहीतुम्हनीकिउपाई॥क
रियदैवजौंहोइसहाई॥मंत्रनयहलछिमनमनभावा॥रामबचनसुनिअतिदुखपावा
नाथदैवकरकौनभरोसा॥सोखियसिंधुकरियमनरोसा॥कादरमनकहएकअधारा
दैवदैवआलसीपुकारा॥सुनतबिहसिबोलेरघुबीरा॥ऐसइकरबधरहुमनधीरा॥अस
कहिप्रभुअनुजहिसमुझाई॥सिंधुसमीपगएरघुराई॥प्रथमप्रनामकीन्हसिरनाई
बैठेपुनितटदर्भडसाई॥जबहिंबिभीषनप्रभुपहिंआए॥पाछेंरावनदूतपठाए॥१
दोहा॥ःसकलचरिततिन्हदेखेधरेंकपटकपिदेह॥प्रभुगुनहृदयसराहहिंसर
नागतपरनेह॥५१॥प्रगटबखानहिंरामसुभाऊ॥अतिसप्रेमगाबिसरिदुराऊ॥रिपु २३
केदूतकपिनतबजाने॥सकलबांधिकपीसपहिंआने॥कहसुग्रीवसुनहुसबबानर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अंगभंगकरिपठवहुनिसिचर॥सुनिसुग्रीवँवचनकपिधाए॥वाँधिकटकचहुपासफि-
राए॥वहुप्रकारमारनकपिलागे॥दीनपुकारततदपिनत्यागे॥जोहमारहरनासा
काना॥तेहिकोसलाधीसकेआना॥सुनिलछिमनसवनिकटवोलाए॥दयालागि
हसितुरतछोडाए॥रावनकरदीजेहुयहपाती॥लछिमनवचनवाचुकुलघाती॥दोहा
कहेहुमुखागरमूढसनममसंदेसउदार॥सीतादेइमिलउनतआवाकालतुम्हार॥
५३॥तुरतनाइलछिमनपदमाथा॥चलेदूतवरनतगुनगाथा॥कहतरामजसुलंका
आए॥रावनचरनसीसतिन्हनाए॥विहसिदसाननपूछीवाता॥कहसिनसुकआप
निकुसलाता॥पुनिकहुखवरिविभीषनकेरी॥जाहिमृत्युआईअतिनेरी॥करतरा
जलंकासठत्यागी॥होइहिजवकरकीटअभागी॥पुनिकहुभालुकीसकटकाई॥क

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० २५

ठिनकालप्रेरितचलिआई॥जिन्हकेजीवनकररषवारा॥भएउमृदुलचितसिंधुबिचा
रा॥कहुतपसिन्हकैबातबहोरी॥जिन्हकेहृदयत्रासअतिमोरी॥दोहा॥ कीभइभेंटकि
फिरिगएश्रवनसुजसुसुनिमोर॥कहसिनरिपुदलतेजबलबहुतचकितचिततोर॥५३
नाथकृपाकरिपूछेहुजैसे॥मानहुकहाक्रोधतजितैसे॥मिलाजाइजबअनुजतुम्हारा॥
जातहिरामुतिलकतेहिसारा॥रावनदूतहमहिसुनिकाना॥कपिन्हबांधिदीन्हेदुषना
ना॥श्रवननासिकाकाटनलागे॥रामसपथदीन्हेहमत्यागे॥पूछेहुनाथरामकटका
ई॥बदनकोटिसतबरनिनजाई॥नानाबरनभालुकपिधारी॥बिकटाननबिसालभय
कारी॥जेहिपुरदहेउहतेउसुततोरा॥सकलकपिन्हमहतेहिबलथोरा॥अमितनाम २५
भटकठिनकराला॥अमितनागबलबिपुलबिसाला॥दोहा॥ द्विबिदमयंदनीलन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लअंगद गद विकटासी॥ दधिमुष केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि॥५४॥ ये कपि सब
सुग्रीव समाना॥ इन्ह सम कोटिन्ह गनै को नाना॥ राम कृपा अतुलित बल तिन्हहीं॥ तृ
न समान त्रैलोकहि गनहीं॥ अस मैं सुना श्रवन दसकंधर॥ पदुम अठारह जूथप बंदर॥
नाथ कटक महं सो कपि नाहीं॥ जो न तुम्है जीतै रन माहीं॥ परम क्रोध मीजहि सब हाथा॥
आयसु पै न देहि रघुनाथा॥ सोषहि सिंधु सहित झष ब्याला॥ पूरहि न त भरि कुधर वि
साला॥ मर्दि गर्द मिलवहि दससीसा॥ ऐसइ बचन कहहि सब कीसा॥ गर्जहि तर्जहि सह
ज असंका॥ मानहु ग्रसन चहत हहि लंका॥ दोहा॥ सहज सूर कपि भालु सब पुनि सि
र पर प्रभु राम॥ रावन काल कोटि कहु जीति सकहि संग्राम॥५५॥ राम तेज बल बुधि विपु
लाई॥ सेष सहस सत सकहि न गाई॥ सक सर एक सोषि सत सागर॥ तव भ्रातहि पूछेउ

सुं० नयनागर॥तासुवचनसुनिसागरपाहीं॥मागतपंथकृपालमनमाहीं॥सुनतवचनवि
५५ हसादससीसा॥जौंअसिमतिसहाइकृतकीसा॥सहजभीरुकरवचनदिढाई॥सागरस
नठानीमचलाई॥मूढमृषाकाकरसिवडाई॥रिपुवलवुद्धिथाहमैंपाई॥सचिवसभीतवि
भीषनजाकें॥विजयविभूतिकहांजगताकें॥सुनिषलवचनदूतरिसवाढी॥समयविचारि
पत्रिकाकाढी॥रामानुजदीन्हीयहपाती॥नाथवचाइजुडावहुछाती॥विहसिवामकर
लीन्हीरावन॥सचिववोलिसठलागवचावन॥दोहा॥ वातनमनहिरिझाइसठजनि
घालसिकुलषीस॥रामविरोधनउवरसिसरनविष्नुअजईस॥कीतजिमानअनुजइव
प्रभुपदपंकजभृंग॥होहिकिरामसरानलषलकुलसहितपतंग॥५६॥सुनतसभयमन ५५
मुषमुसुकाई॥कहतदसाननसवहिसुनाई॥भूमिपराकरगहतअकासा॥लघुतापसक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रवागविलासा॥कहसुकनाथसत्यसववानी॥समुझहुछाडिप्रकृतिअभिमानी॥सुन
हुवचनममपरिहरिक्रोधा॥नाथरामसनतजहुविरोधा॥अतिकोमलरघुवीरसुभाउ
जद्यपिअखिललोककरराउ॥मिलतकृपातुम्हपरप्रभुकरिही॥उरअपराधनएको
धरिही॥जनकसुतारघुनाथहिदीजे॥येतनाकहामोरप्रभुकीजे॥जवतेहिंकहादेनवै
देही॥चरनप्रहारकीन्हसठतेही॥नाइचरनसिरुचलासोतहाँ॥कृपासिंधुरघुनायक
जहाँ॥करिप्रनामनिजकथासुनाई॥रामकृपाआपनिगतिपाई॥रिषिअगस्तिकीसा
पभवानी॥राछसभयउरहामुनिज्ञानी॥वंदिरामपदवारहिवारा॥मुनिनिजआश्र
मकहुपगुधारा॥दोहा॥: विनयनमानतजलधिजडगएतीनिदिनवीति॥वोलेराम
सकोपतवभयविनुहोइनप्रीति॥५७॥लछिमनवानसरासनआनू॥सोषौंवारिधि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं० ५६ बिसमियहरूसानू॥सठसनबिनयकुटिलसनप्रीती॥सहजक्रपिनसनसुंदरनीती॥म
मतारतसनज्ञानकहानी॥अतिलोभीसनबिरतिबखानी॥क्रोधिहिसमकामिहिह
रिकथा॥ऊसरबीजबोयेफलजथा॥असकहिरघुपतिचापचढावा॥यहमतलछिम
नकेमनभावा॥संधानेउप्रभुबिसिखकराला॥उठीउदधिउरअंतरज्वाला॥मकरउ
रगझषगनअकुलाने॥जरतजंतुजलनिधिजबजाने॥कनकथारभरिमनिगननाना॥
बिप्ररूपआयउतजिमाना॥दोहा॥ काटेहिपयकदलीफरैकोटिजतनकोउसींच॥
बिनयनमानखगेससुनुडाटेहिपयनवनीच॥५८॥सभयसिंधुगहिपदप्रभुकेरे॥छ
मऊनाथसबअवगुनमेरे॥गगनसमीरअनलजलधरनी॥इन्हकइनाथसहजजड ५६
करनी॥तवप्रेरितमायाउपजाये॥स्रष्टिहेतुसबग्रंथनिगाए॥प्रभुभलकीन्हमोहि

सिषदीन्ही॥ मरजादापुनितुम्हहीकीन्ही॥ ढोलगवाँरसूद्रपसुनारी॥ सकलताडनाके
अधिकारी॥ प्रभुप्रतापमैजावसुषाई॥ उतरिहिकटकनमोरिवडाई॥ प्रभुअग्याअपेल
श्रुतिगाई॥ करौंसोवेगिजोतुम्हहिसहाई॥ दोहा॥ सुनतविनीतवचनअतिकहकृपाल
मुसुकाइ॥ जेहिविधिउतरैकपिकटकतातसोकहहुउपाइ॥ ५८॥ नाथनीलनलकपि
दोउभाई॥ लरिकाईरिषिआसिषपाई॥ तिन्हकेपरसकिएगिरिभारे॥ तरिहहिंजलधि
प्रतापतुम्हारे॥ मैपुनिउरधरिप्रभुप्रभुताई॥ करिहौंवलअनुमानसहाई॥ एहिविधि
नाथपयोधिवधाइय॥ जेहियहसुजसलोकतिहुगाइय॥ एहिसरममउत्तरतटवा
सी॥ हतहुनाथषलनरअघरासी॥ सुनिकृपालसागरमनपीरा॥ तुरतहिहरीरामर
नधीरा॥ देषिरामवलपोरुषभारी॥ हरषिपयोनिधिभयोसुषारी॥ सकलचरिततकहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुं०
५१

प्रभुहि सुनावा ॥ चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥ छंद ॥ः॥ निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीर
घुपतिहि यह मत भायऊ ॥ यह चरित कलि मल हर यथामति दास तुलसी गायऊ
सुष भवन संसय समन दवन विषाद रघुपति गुन गना ॥ तजि सकल आस भरोस गाव
हि सुनहि संतत सठ मना ॥ दोहा ॥ः सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान ॥ साद
र सुनहि ते तरहि भव सिंधु बिना जलजान ॥ ६० ॥ इति श्री रामचरितमानसे सकल
कलिकलुषविध्वंसने ज्ञानसंपादनो नाम पंचमः सोपानः ॥ ५ ॥ सुंदरकांड समाप्त
शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥ संवत ॥ १८४० ॥ माघ शुक्ल षष्ठम्यां ६ लि० सजीवनलाल

५१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative